દૂસરા
કદમ
દૂસરી પંચવર્ષીય યોજના

दूसरा कदम

[दूसरी पंचवर्षीय योजना]

हमने अपनी यात्रा का पहला चरण पूरा कर लिया है
किन्तु हमें तुरन्त ही अपनी यात्रा के अगले चरण
के लिये प्रस्थान कर देना चाहिये।

—नेहरू

लेखक

सन्तराम वत्स्य

प्रकाशक

इण्डियन पब्लिशिंग हाउस

नई सड़क, दिल्ली

प्रथम संस्करण
१९५७

•

मूल्य
७५ नए पैसे
(बारह आने)

•

मुद्रक
बालकृष्ण, एम० ए०
युगान्तर प्रेस, डफ़रिन पुल, दिल्ली

दूसरा कदम

•

सुखराम—चाचा जी, राम-राम।

धनीराम—राम-राम भाई। भई बुरा न मानना। मैंने पहचाना नहीं।

सुखराम—चाचा जी, इसमें बुरा मानने की क्या बात है। मैं सुखराम हूँ।

धनीराम—सुखराम, रामदास का बेटा ?

सुखराम—हां, चाचा !

धनीराम—सुनाओ बेटा, राजी-खुशी तो हो। तुमने तो भई घर-गांव क्या, अपनी जन्मभूमि तक को भुला दिया। एक बार गए तो बस ऐसे गए कि न चिट्ठी न पतरी। पूरे १५ सालों बाद आए हो। पहले पाँच साल तो तुम्हारे बारे में तरह-तरह की बातें सुनते रहे। कोई कहता कि वह नाम और भेस बदलकर साधु बना अपने को छिपाता फिरता है। कोई कहता कि सरकार ने उसे चुपचाप काले पानी भेज दिया है। एकाध ने तो यहां तक कह दिया कि गोली से उड़ा दिया गया है। फिर यह भी सुनने में आया कि तुम किसी दूसरे देश को भाग गए हो। पर जब आजादी के बाद भी चार-पांच साल तक तुम्हारा कोई खत-पतर नहीं आया तब तो

सभी तुम्हारे जीता होने के बारे में शक करने लगे। फिर जिस दिन अफरीका से लिखी तुम्हारी चिट्ठी मिली कि मैं राजी-खुशी हूँ और जल्दी ही अपने देश को आने वाला हूँ, तो समझो कि सारा गांव मारे खुशी के आपे से बाहर हुआ जाता था।

पर भई यह तो बताओ कि कैसे गए, कहां रहे, क्या किया-धरा ?

सुखराम—चाचा जी, यह बड़ी लम्बी कहानी है। इसे आप को फिर सुनाऊंगा।

धनीराम—पर यह तो बताओ कि ये दो-तीन महीने तुम कहां रहे। बम्बई तो तुम बहुत पहले पहुँच गए थे फिर क्या यहां तक पैदल आए हो जो इतने दिन लगा दिये ?

सुखराम—चाचा जी, हम अफरीका से कई आदमी एक-साथ आए थे। जहाज से उतरे तो सभी ने सलाह की कि घर-गांव जाने से पहले एक बार देश की खास-खास जगहों को देखते चलें। बस उसी में ये दो-ढाई महीने लग गए।

धनीराम—तो यों कहो कि गंगा भी नहा आए। अच्छा किया बेटा, दूसरे देश में जो इतने दिन रहे थे

उसकी छूत मिट गई। पर अब ब्राह्मण जिमाने का काम और कर दो।

सुखराम ठहाका मार हँस पड़ा। कहने लगा—तो क्या गंगा नहाने पर भी छूत बाकी है। हमने तो सुना है कि दो बूंद गंगा जल पी लेने से और छिड़काव कर लेने से ही छूत मिट जाती है। खैर, आप चिन्ता न करें, जैसा आप कहेंगे वैसा ही करूंगा।

ओह, चाचा जी, इन पिछले सालों में हमारा गांव कितना बदल गया है। कितने ही बड़े-बूढ़े चल बसे। कितनों की शादियां हुईं। कितने नए मकान बने।

दादा थे तो आपके घर में कैसी भीड़ लगी रहती थी। सुख-दुःख हो, लड़ाई-झगड़ा हो, लेन-देन हो, जमीन-जायदाद की बात हो, बिना उनसे सलाह किये कोई कुछ नहीं करता था।

धनीराम—क्या बताएं बेटा, वे अच्छे-भले थे। अब भी हम से किसी कदर कम न थे। न तो सिर का एक बाल सफेद हुआ था और न कोई दांत ही हिला था। पर हमीं नालायक साबित हुए। घर-गांव ही नहीं, पास-पड़ोस के गांव वालों में भी उनका बड़ा नाम था। पर जब घर में ही हम दोनों भाइयों में झगड़ा होने लगा तो उन्हें जिन्दगी बोझ लगने लगी। वे रात-दिन भगवान् से यही प्रार्थना करते कि हे भगवान्! या तो इन दोनों को अकल दो, जिससे ये मिल-जुलकर रह सकें या फिर मुझे मौत दो ताकि मैं अपने जीते-जी तो यह सिर-फुटौवल न देखूं। सो सच पूछो तो हमें तो अकल

नहीं आई और भगवान् ने उनके लिए मौत भेज दी।

सुखराम—पर चाचा, मैं कैसे मानूं कि आपने झगड़ा किया होगा। छोटे चाचा जरूर कुछ गर्म स्वभाव के हैं, पर ऐसे तो वह भी नहीं थे।

धनीराम—तुम ठीक ही कहते हो सुखराम। बात ऐसी थी, पर क्या बताएँ। हमारी तो आपस में निभ ही रही थी, पर छोटे की बहू जो आई तो फिर समझो कि मन-मुटाव दिनों-दिन बढ़ता ही गया। पर भाई समझदार होता तो उसकी क्या मजाल थी। खैर, छोड़ो इन बातों को। पुराने मुर्दे उखाड़ने से क्या फायदा। उलटे सड़ांध ही फैलेगी। मुझ से तो कोई पूछता है तो मैं तो यही कहता हूँ कि भई हमारा भी कसूर था। आखिर एक हाथ से तो ताली नहीं बजती। पर सच पूछो तो भाई के अलग होने का मुझे दुःख नहीं है। देर-सवेर भाई-भाई अलग होते ही हैं। हमने ही कोई नई बात नहीं की। पर दुःख तो इस बात का है छोटा अलग होकर भी तो सुखी नहीं है। उसे सलाहकार भी ऐसे मिले हुए हैं जो कभी सीधे रास्ते चलने ही नहीं देते। जब अलग हुए थे तो ज़मीन का जो नहरी हिस्सा था, वह उसे मिला था। हमारे हिस्से जो ज़मीन का टुकड़ा आया था, उसमें सिंचाई का कुछ भी इन्तजाम नहीं था। वर्षा हो जाती तो कुछ हो जाता नहीं तो राम भरोसे। छः मुंह खाने वाले थे। हमारा तो अनाज खरीदते-खरीदते नाक में दम हो गया। बच्चों के पढ़ने-लिखने की उमर थी पर पढ़ाई-

लिखाई के लिये भी रुपया चाहिए । और वही हमारे पास था नहीं । सोच-सोचकर आखिर हमने तो यही फैसला किया कि पहले तो पेट की रोटियों का बन्दोबस्त करना चाहिए; भूखे पेट तो पढ़ाई-लिखाई भी नहीं होती । इसलिये हमने पहला काम यह किया कि जैसे-तैसे करके खेतों में रहट लगवा लिया और सारे जने खेती की पैदावार बढ़ाने में जुट गए । हमारे हिस्से की खेती गाँव की चरागाह के साथ लगती थी । रखवाली रखने पर भी जानवर उसे उजाड़ जाते और हम देखते रह जाते । बाड़ देते-देते हम तंग आ गए । आखिर एक बात सूझी कि क्यों न ज़मीन की हद के साथ-साथ पेड़-पौधे लगा दिए जाएँ । सो हमने लगा दिए । उससे दुहरा लाभ हुआ । एक तो उन्होंने बाड़ का काम दिया और दूसरे ईंधन की जरूरत भी उनसे पूरी होने लगी । पहले बहुत-सा गोबर हम उपले थाप कर जला डालते थे । वह बचने लगा तो खेतों को जरूरत भर खाद मिलने लगी और फसल एकदम दूनी हो गई । अब दूर से देखें तो उन पेड़-पौधों की खड़ी कतार ऐसी दीखती है जैसे सिपाहियों की कतार खड़ी हो ।

सुखराम—चाचा, अभी तो ये पेड़ छोटे-छोटे हैं । बड़े होंगे तो इनसे हो हजारों का लाभ होगा ।

धनीराम—यह तो है ही । तो बेटा, हाथ-पैर मारकर इस राक्षसी भुखमरी से तो छुटकारा मिला पर अभी बहुत कुछ काम करना बाकी था । लड़कों को कुछ काम-

धन्धा सिखाना था। आखिर खेती पर कितनों का गुजर होता। सो बड़े लड़के ने तो दसवीं पास करके साल भर बच्चों को पढ़ाना-लिखाना सिखाने के ढंग सीखे और अपने ही गांव की पाठशाला में नौकर हो गया। घर के घर और नौकरी की नौकरी। उससे छोटा अभी-अभी बंधक पास करके आया है। वह कहता है कि वह किसी की नौकरी नहीं करेगा। आस-पास के चार छः गांव में एक भी वैद नहीं है, सेवा की सेवा और रोजगार का रोजगार।

तीसरे ने पिछले साल आठवीं पास की थी। हम सोच ही रहे थे कि आगे पढ़ाएँ या न पढ़ाएँ कि मालूम हुआ सरकार जिले भर के गांवों से कोई सौ किसानों के लड़कों को चुनकर खेती-बाड़ी के नए-नए तरीके सिखाएगी, जिससे वे सब गांवों में जाकर इन तरीकों से खेती करें और देश की पैदावार बढ़ाएँ। सो उसने भी दरखास्त दे दी। वह मंजूर हो गई। वह वहां यह सब सीख रहा है। कोई महीने भर में आ जाएगा। सो वह खेती का काम संभाल लेगा। सबसे छोटा अभी छठी में पढ़ रहा है।

खेती-बाड़ी के काम से बीच-बीच में कुछ खाली समय भी बच जाता है। वह बेकार ही जाता था। अब हमने

उसके लिए भी काम जुटा लिया है। तुम्हारी चाची चर्खे पर घर के लोगों की जरूरत जितना सूत कात लेती है। मैंने भी एक नया काम शुरू किया है। रहट के पास की जमीन में सब्जियाँ बीज रखी हैं। अब रोज ताजी सब्जी पकती है। कुछ बच-बचा जाता है तो बेच भी देते हैं।

और सुनो, एक बात बताना तो भूल ही गया। कहते हैं न कि बूढ़े तोते नहीं पढ़ते।

सुखराम—बात तो सच है।

धनीराम—अरे सच नहीं झूठ है। मैं आजकल पढ़ता भी हूँ।

सुखराम—तो क्या पाठशाला में बूढ़ों को भी भरती करने लगे हैं? या बूढ़ों के लिए अलग पाठशाला खुल गई है?

धनीराम—न, यह सब कुछ नहीं। मैं तो घर पर ही पढ़ता हूँ। लड़कों ने सोचा कि हम तो पढ़-लिख गए पर बापू अनपढ़। सो मुझे भी पढ़ाने लगे। सो पहले तो मैंने मना किया कि मुझे अब पढ़-लिख कर क्या करना है। बूढ़े तोते भी कभी पढ़े हैं, पर बड़े लड़के ने मेरी एक न सुनी। और अब तो यह हाल है कि हाथ से पोथी छोड़ने को जी ही नहीं करता। कुछ काम दीखता था सो बड़ा शहर ले गया और पढ़नेवाली ऐनक लगवा दी। अब तो मैं गोसाईं तुलसीदास जी की रामायण के दोहा-चौपाई बड़े मजे में पढ़ लेता हूँ। और बेटा, सच पूछो तो हमारा जन्म तो विद्या के बिना अकारथ ही गया।

सच ही कहते हैं कि 'विद्याहीन नर पशु-समान'। जब से पढ़ना सीखा है, मुझे यों लगता है कि मुझे नई आंखें मिल गई हैं, पहले जैसे मैं अंधा हो था। बात याद आ गई। किसी विद्वान् ने लिखा है कि उल्लू दिन में नहीं देखता, आदमी रात में नहीं देखता। बिल्ली दिन में भी देखती है, रात में भी। अन्धा न दिन में देखता है न रात में। मूर्ख आदमी भी अंधा होता है।

कैसी मिसाल दी है, और कितनी जोरदार बात कही है।

तो कहो, अब मान गए कि नहीं कि बूढ़े तोते भी पढ़ सकते हैं।

ये सारी बातें सुनीं तो सुखराम खिलखिलाकर हँस पड़ा। कहने लगा—चाचा, तुम्हारा घर तो मानो भारत का छोटा-सा रूप है।

धनीराम ने पूछा—भई, यह बात तो मेरी समझ में नहीं आई। जरा खोलकर कहो तो कुछ पता भी लगे।

आजादी के बाद

सुखराम—तो सुनिये, १९४७ में भारत के दो टुकड़े बने, भारत और पाकिस्तान। सिन्ध नदी और पंजाब की नहरों से जिस जमीन के बड़े हिस्से की सिंचाई होती थी, वह पाकिस्तान को मिला। पूर्वी बंगाल की उपजाऊ जमीन भी उसी के हिस्से आई। इनके चले जाने से भारत के सामने अन्न की समस्या पैदा हो गई। वैसे कमी तो पहले भी थी, पर यह हिस्सा चला जाने के बाद तो हालत बहुत ज्यादा बिगड़ गई। लाखों लोग

जो पाकिस्तान से उखड़ कर आए, उनके लिए मकान, खाना-पीना और कपड़ा जुटाना और भी कठिन हो गया।

इन और ऐसी ही दूसरी मुसीबतों का सामना करने के लिए भारत सरकार ने एक योजना बनाई।

धनीराम—यह योजना क्या होती है ?

सुखराम—योजना से मतलब है कि जो भी काम किया जाए, उसे ढंग से पूरी तरह सोच-विचार कर आगा-पीछा देखकर, पूरी तैयारी के साथ किया जाए। मिसाल के तौर पर जैसे एक मकान बनाना है तो पहले से ही यह सोच-विचार लेना चाहिए कि वह कितना बड़ा होगा, उसका नक्शा कैसा होगा, कितने कमरे बनेंगे, दरवाजा किस तरफ होगा। सामान क्या-क्या और कितना

लगेगा। कितने बढ़ई, राज, मजदूर लगेंगे। और फिर यह सब कुछ करने के लिये कितने रुपयों की जरूरत होगी।

पहले से ही ये सारी बातें सोच-विचार ली जाएं और उसी के अनुसार तैयारी की जाए तो काम ठीक होता है, और आसानी से होता है। उसमें रुकावट नहीं पड़ती। जितना बड़ा काम होता है, उस पर उतना ही ज्यादा सोच-विचार करने की जरूरत होती है। बस, किसी भी काम को शुरू करने से पहले ये जो इतनी सारी बातें तय करली जाती हैं, इसे ही योजना कहते हैं।

योजना बनाने वालों ने यह मानकर सब बातें तय कीं कि हमारा देश जो बहुत गरीब है तो इसे कोई भगवान् ने शाप नहीं दे रखा है कि तू गरीब ही रहेगा। हम दूसरे कई देशों के मुकाबले में बहुत पिछड़े हुए थे। पिछड़े होने का कारण था गुलामी। जब आजाद हुए तो देश के नेताओं को देश की चिन्ता हुई। दूसरे देशों में खेती-बाड़ी और उद्योग-धन्धों में नए-नए तरीकों से सुधार किये गए। पर हमारे देश में तो दो हजार साल पुराना जो ढंग था, वही चलता रहा।

खेती-बाड़ी होती थी पर इन्द्र देवता की कृपा पर। बरस गया तो उपज गया, न बरसा तो न उपजा। नहरें एक तो थीं ही कम और जिस हिस्से में थीं, वह पाकिस्तान में चला गया।

रेलों-सड़कों की कमी थी। देश के एक भाग में जो चीज होती उसे मौके पर दूसरे भाग में नहीं पहुंचा पाते।

डाक्टर, वैद, हकीम भी कम थे। देहातों में रोगी बिना दवाई के ही चल बसते। होनहार बच्चों की पढ़ाई-लिखाई का भी ठीक इन्तजाम नहीं था। गाँवों में तो बहुत ही कम स्कूल थे। ये और ऐसे ही बीसियों दूसरे काम करने को पड़े थे।

तो पहली योजना में २३ सौ करोड़ रुपए खर्च करने की बात तय हुई। अब इस २३ सौ करोड़ रुपए को इस तरह खर्च करना था कि देश की चौमुखी उन्नति हो। यहाँ यह जान लेना बहुत जरूरी है कि किसी एक काम में ही उन्नति करने से बात नहीं बन सकती थी। एक काम में उन्नति कर लेने पर दूसरे काम में उन्नति करना बहुत जरूरी हो जाता है, नहीं तो एक काम में की गई उन्नति भी बेकार हो जाती है।

मान लीजिए बम्बई में कपड़ा बुनने के कारखाने हैं। उन कारखानों में जो कपड़ा तैयार होता है, उसे देश के कोने-कोने में पहुँचाने के लिए रेलों की जरूरत है और उन कारखानों के लिए कपास और कोयला पहुँचाने के लिए रेलें चाहियें। इन कारखानों में जो लोग काम करते हैं, उनके लिए घर चाहियें, उनकी दवा-दारू के लिये हस्पताल चाहिएं और उनके बच्चों के लिये स्कूल चाहिएं।

तो योजना बनाने वालों ने देखा कि हर साल लाखों मन अनाज समुन्दर पार के देशों से आता है। इस पहली योजना में पहला कदम यह उठाया कि देश को जितने अनाज की जरूरत है, वह देश की धरती में ही पैदा हो। यही वजह थी कि पहली योजना में खेती-बाड़ी, सिंचाई और

गाँवों की उन्नति के लिये बहुत रुपया खर्च किया गया। पशुओं की नस्ल को सुधारना, पशुओं को रोगों से बचाना और उनकी ठीक देख-भाल इन सब बातों का सम्बन्ध भी खेतों से था, इसलिये यह काम भी हाथ में लिया गया। बहुत-सी जमीन कांस उगने से बेकार पड़ी थी, उसे साफ किया गया, गांव वालों को खेती के नए औजार और नए तरीके इस्तेमाल करने की शिक्षा दी गई। ये और ऐसी ही दूसरी रुकावटें जो पैदावार बढ़ने नहीं देती थीं, उन्हें दूर हटाया गया।

पहली योजना में खेती का सवाल एक हद तक हल हुआ, ज्यादा जमीन की सिंचाई का इन्तजाम हुआ, बिजली पहले से दूनी हो गई, दूसरे उद्योग धन्धे भी दुगुने हो गये और कई नए कारखाने, स्कूल, अस्पताल खुले और पाकिस्तान से उखड़कर आए लोगों को बसाने का काम हुआ। अब कहो चाचा जी, आपके घर की हालत और देश की हालत थी न एक ही जैसी।

धनीराम—अरे भई, यह जो कुछ तुम कह गए, मुझे तो ऐसा लग रहा है, जैसे कोई मेरी ही राम-कहानी मुझे सुना रहा हो।

सुखराम—तो चाचा, जैसा कि हमारे प्रधान मन्त्री पं० नेहरू ने दिल्ली में कहा कि हमने अपनी यात्रा का पहला चरण पूरा कर लिया है, किन्तु हमें तुरन्त अपनी यात्रा के अगले चरण के लिये प्रस्थान कर देना चाहिये।

और अब देश के नेताओं ने दूसरा कदम उठाया है।

पहली योजना में काम तो खूब हुआ पर इतने बड़े देश के इतने सारे लोगों के लिये वह काफी नहीं था।

धनीराम—सुखराम, मुझे तो तुम्हारे कदम उठाने की बात सुनकर वामन अवतार की बात याद आ गई। कथा है कि उन्होंने तीन कदमों में सारी धरती ही नाप दी थी। तो यह हमारी सरकार भी इतना ही बड़ा एकाध कदम और उठाएगी तो भारत का एक-एक गांव, एक-एक आदमी सुखी हो जाएगा और अपना देश फिर पुरानी 'सोने की चिड़िया' बन जाएगा।

सुखराम—चाचा एक हद तक तो आपकी बात ठीक है। पर यह योजनाएं रुकने वाली नहीं हैं। देश के ये बढ़ते कदम बढ़ते ही रहेंगे। और सच पूछो तो बढ़ना ही जीवन है और रुकना मौत। बैठा हुआ बाज वहीं का वहीं रह जाता है और चलती हुई चिऊंटी पहाड़ की चोटी पर पहुँच जाती है।

तो मैं दूसरी योजना की बात कह रहा था। दूसरी योजना में जो काम करना है, उसे थोड़े-से शब्दों में कहना हो तो यों कहें कि भारत के एक-एक गांव को खुशहाल बनाना, देश में बड़े-बड़े कारखाने खोलना और देश को

गरीब और पिछड़ी हुई जनता की गरीबी दूर करना और उसे उन्नति के लिए पूरा-पूरा मौका देना।

सच तो यह है कि दूसरी योजना पहली योजना की ही कड़ी को आगे बढ़ाती है। इसमें कोई ४३०० करोड़ रुपया खर्च किया जायेगा।

दूसरी योजना की नींव तीन बातों पर रखी गई है :

(१) देश की सब तरह की पैदावार बढ़ाना

(२) बेरोजगारों को काम पर लगाना

(३) आर्थिक विषमता को दूर करना

धनीराम—भई, पहली दो बातें तो समझ में आ गईं, पर तीसरी बात को ज़रा खोलकर बताओ, वह मेरे पल्ले नहीं पड़ी।

सुखराम—मैंने कहा न, आर्थिक विषमता को दूर करना—इसका मतलब यह है कि ऐसा न हो कि कुछ लोग तो बहुत अमीर बन जाएँ और बहुत से लोग गरीब रहें। इसलिये जो बहुत ऊँचे चढ़ गए हैं, वे कुछ नीचे उतरें और जो नीचे हैं, वे ऊपर चढ़ें। इस प्रकार दोनों प्रकार के लोगों में बहुत मामूली-सा फर्क रह जाएगा। और चाचा, योजना की यह सबसे महत्त्वपूर्ण बात है। इसी में देश की भलाई भी है, और शोभा भी।

जब-जब और जहाँ-जहाँ भी अमीरी और गरीबी की खाई चौड़ी होती जाती है, तो अमीर और गरीब वह दो गुट बन जाते हैं और यह एक दूसरे के दुश्मन बन जाते हैं। झगड़े शुरू होते हैं, और खून-खराबा होता है। देश की उन्नति रुक जाती है। इसलिये इस खाई को पाटना बहुत

जरूरी था। तो यह तीन बातें हैं, जिनको सामने रखकर इस दूसरी योजना को तैयार किया गया है।

धनीराम—अच्छा, अब समझ गया। तो मेरे विचार में योजना बनाने वालों ने पहले यह हिसाब लगा लिया होगा कि हमारे पास इतने रुपये हैं, और इस-इस काम पर इतना-इतना खर्च करेंगे।

सुखराम—नहीं, यह बात नहीं है। मैं एक मिसाल देता हूँ। मान लीजिये, कि आप अपने घर की हालत सुधारना चाहते हैं। ताकि सब को भर पेट रोटी, तन ढकने को कपड़ा, बीमारी में दवा-दारू गर्मी-सर्दी से बचने के लिए मकान, बच्चों की पढ़ाई-लिखाई, बड़ों को रोज़गार मिले। और मान लीजिये कि आपके पास रुपए थोड़े हैं तो क्या कोई भूखे पेट सो जाए, कोई नंगा रह जाए, कोई घर का आदमी दवाई के बगैर मर जाए, बच्चे अनपढ़ रह जाएँ?

धनीराम—कभी नहीं।

सुखराम—आपने ठीक कहा। इसलिये पहले यह अन्दाजा लगा लिया जाता है कि देश के लोगों के लिए कितना अन्न चाहिए, कितना कपड़ा चाहिए, कितने मकान और स्कूल चाहियें, कितने डाक्टर और हस्पताल चाहियें। और वे तो इस बात पर विचार करते हैं कि अगले सालों में देश की आबादी कितनी बढ़ जाएगी और लोगों की जरूरतें कितनी बढ़ेंगी। रोजगार चाहने वाले कितने नौजवान हर साल स्कूलों-कालेजों और दूसरी जगहों से आएंगे।

धनीराम—भई क्या मार्के की बात सोची है। सच है भई, समझदार तो वही है जो आगा-पीछा सोचकर काम करे।

सुखराम—अजी एक-से-एक बढ़कर दिमाग वाले आदमियों ने इसे बनाया है। क्या मजाल कि कोई बात छूट गई हो।

तो जब यह बात मालूम हो जाए कि इतनी हमारी जरूरत है, और यह कुछ हमारे पल्ले है तो दोनों में ऐसा मेल बिठाया जाय कि काम ठीक हो जाए।

जहाँ तक अनाज की बात है, पहली योजना में उसकी पैदावार बढ़ी है और हम अपने पाँवों पर खड़े हो गए है, पर फिर भी दूध, घी-तेल, फल, गुड़-शक्कर आदि की काफी कमी है। और उस कमी को दूर करना है।

कपड़े की अभी कमी है। औसत प्रति आदमी कम से कम १८ गज कपड़ा साल में चाहिए। पर अभी तक यह १५-१६ गज ही प्रति आदमी औसत पड़ता है।

मकानों की कमी तो सबसे ज्यादा है। इसे भी दूर करना है।

जहाँ तक पढ़ाई-लिखाई का सम्बन्ध है, हमारे विधान में लिखा है कि १४ वर्ष तक के बच्चों को पढ़ाई-लिखाई मुफ्त और जरूरी होनी चाहिये। दूसरी योजना में इतना तो शायद न हो सके पर सौ पीछे साठ की पढ़ाई-लिखाई का इन्तजाम तो हो ही जाएगा।

अब रह गई बात दवा-दारू की। आबादी को देखते हुए हमारे देश में डाक्टर-वैद-हकीम बहुत थोड़े हैं। जो हैं

भी उनमें भी बहुत से तो नीम-हकीम ही हैं। वे कुछ ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं हैं। और यह काम ऐसा है कि जरा-सी भूल-चूक हुई तो गोली अन्दर और दम बाहर। तो जरूरत ऐसे पढ़े-लिखे लोगों की है जो अपने काम को अच्छी तरह जानते हों। इन डाक्टरों के इलावा ऐसे हस्पतालों की जरूरत है जहाँ बीमारों को दाखिल किया जा सके और वे चौबीसों घंटे डाक्टरों की देखभाल में रहें। ऐसे हस्पताल तो और भी कम हैं। तो ऐसे हस्पताल बनवाने पड़ेंगे।

अब तक जो हस्पताल बने हैं वे ज्यादातर शहरों में ही हैं। इससे गाँव वालों को तो केवल भगवान् का ही भरोसा है। अब यह बात भी नहीं रहेगी। गांववालों को भी रोग-संकट में ढंग का डाक्टर और दवाई मिल सके, ऐसा इन्तजाम किया जायगा।

रुपया कहाँ से आएगा ?

अब सवाल पैदा होता है कि इन सब जरूरतों को पूरा करने के लिए रुपया कहाँ से आएगा ?

रुपया आएगा, देश की पैदावार बढ़ने से। कई नए-नए काम-धन्धे चालू करने पड़ेंगे। ज्यादा लोगों को रोजगार मिलेगा।

और सच तो यह है कि धरती माता की सेवा करनी पड़ेगी। खेती की पैदावार बढ़ानी होगी। जमीन में छिपे खजाने—मेरा मतलब उन खजानों से है, जिन्हें खानें कहते हैं—उनसे दौलत निकालनी होगी। कोयला, लोहा, नमक, सोना, अभ्रक वगैरा बहुत-सी चीजें हमारे देश की खानों से निकलती हैं।

पानी से सिंचाई का और बिजली बनाने का काम लेना है। जंगलों की पैदावार बढ़ाकर मकानों और दूसरे कामों के लिये लकड़ी जुटानी है।

यह सब कुछ करने से हमारे देश की आमदनी सवाई हो जाएगी।

देश की जरूरत की चीजें पैदा करने के लिये नए-नए उद्योग-धन्धे शुरू करने होंगे। आगे जो बहुत-सी चीजें दूसरे देशों से आती थीं, अब अपने ही देश में तैयार करनी हैं। इससे दोहरा लाभ होगा। एक तो देश का पैसा बाहर नहीं जाएगा और दूसरे काम-धन्धों के बढ़ने से बेरोजगारी दूर होगी।

धनीराम—तो क्या अब सरकार अपने कारखाने खोलेगी ?

हमने तो भई यही सुना है कि सरकार तो हकूमत करती

है। कारखाने तो सेठ-साहूकारों के होते हैं।

सुखराम—एक तरह से तो बात आपकी ठीक है। आगे हमारे देश में विदेशियों की हकूमत थी। और वे अपने पाँव मजबूती से जमाना चाहते थे। इसलिये उन्हें हकूमत का फिकर था। दूसरे अगर यहां ही सारी चीजें पैदा होने लगतीं तो उनके देश से जो करोड़ों की खरीद होती थी, वह मारी जाती। उनका लाभ तो इसी बात में था कि हम कभी भी अपने पाँवों पर खड़े न हों। पर अब तो वह बात नहीं रही। अब अपनी सरकार है और उसे इन सब बातों का फिकर है। यह तो हुआ आपकी एक बात का जवाब। अब आगे सुनिये—कुछ बड़े-बड़े उद्योग-धन्धे तो ऐसे हैं, कि उन पर जितना रुपया खर्च करने की आवश्यकता है, उतना सरकार ही खर्च कर सकती है। दूसरे किसी के बस का नहीं है। इसके इलावा एक बात और भी है। कुछ काम ऐसे हैं कि जब तक सरकार उन्हें अपने हाथ में न ले, काम नहीं चलता।

धनीराम—ऐसे कौन-से काम हैं कि जिन्हें अपने हाथ में लिये बिना सरकार का काम नहीं चलता?

सुखराम—१. लड़ाई के सामान को ही लीजिये। ऐसी चीजें क्या दूसरों पर छोड़ी जा सकती हैं! कभी नहीं। कुछ और कामों के नाम भी सुन लीजिये, जिन्हें पूरे तौर पर सरकार अपने हाथ में लेगी। २. लोहा और इस्पात, इसकी खानों से निकालने की मशीनें, इसकी ढलाई और घड़ाई और मशीनें बनाना।

३—बिजली की मशीनें

४—कोयला

५—मिट्टी का तेल वगैरा ।

६—खानों से निकलने वाली धातें—लोहा, गन्धक, सोना, हीरे, मैंगनीज वगैरा

७—हवाई जहाज

८—रेलगाड़ियाँ

९—समुद्री जहाज

१०—टेलीफोन, और बे तार की तारें और दूसरे कल-पुर्जे ।

धनीराम—यह सारे काम तो बड़े-बड़े कारखानों में होने वाले हैं । गाँव वालों को तो इनसे कोई खास फायदा होगा नहीं ।

सुखराम—यह बात नहीं है । योजना में गाँवों की जरूरतों का पूरा-पूरा ध्यान रखा गया है । भारत तो गाँवों का देश है । भला गाँवों की उन्नति किये बिना यहाँ कभी सुख-चैन हो सकती है ।

छोटे-छोटे घरेलू धन्धों की बढ़ती के लिये पूरा-पूरा जोर दिया जाएगा ।

राज-काज में चुस्ती और ईमानदारी

धनीराम—सुखराम, यह जो करोड़ों-अरबों रुपया खर्च होगा, इसमें कितना गोल-माल में चला जाएगा, इसका हिसाब भी तो योजना बनाते समय लगा लिया होगा ।

सुखराम—चाचा, यह आपने पते की बात की। पर, इस तरफ उनका ध्यान न गया हो, यह बात नहीं है। इस पर भी पूरा विचार उन लोगों ने किया है।

यह तय हुआ है कि :

१—सरकारी काम-काज में पूरी-पूरी ईमानदारी बरती जाए।

२—राज-काज जल्दी हो, ठीक हो और खर्च भी कम बैठे ऐसा इन्तजाम किया गया है। काम ठीक हो रहा है या नहीं, इसकी भी पूरी-पूरी देखभाल की जाएगी।

जब राज-काज में धान्धली और बेईमानी होती है तो जनता को सरकार पर भरोसा नहीं रहता। और सरकार पर भरोसा ही न रहे तो जनता उसे क्यों अपनी मदद देने लगी। और जनता मदद न करे तो सरकारी काम-काज ठप्प समझो। इसलिये बेईमानी के विरुद्ध लड़ाई लड़ने के लिए सरकार ने कमर कस रखी है।

चाचा, मैंने आपको दूसरी योजना की बात सरसरी तौर पर बताई। अब अगर कहें तो एक-एक बात को ब्यौरेवार सुनाता जाऊँ ?

धनीराम—जरूर सुनाओ, मुझे तो इन बातों को सुनने में

> "हमारा सबसे बड़ा दुश्मन गरीबी है। उस पर हर तरफ से फौजी हमला होना चाहिए—खेतों से, खलिहानों से, कारखानों से, अधिक रोजगार से—हर तरफ से।"
>
> पं० जवाहरलाल नेहरू

बड़ा मजा आ रहा है। भला जिस काम से करोड़ों लोगों का भाग्य बदलने वाला है, रुलाई हँसी में बदलने वाली है, उन बातों को मैं तो किसी कथा-पुराण से कम नहीं समझता हूँ।

सुखराम—तो चाचा जी, अब बारी-बारी से बताऊंगा कि १—खेती, २—सिंचाई और बिजली, ३—उद्योग-धन्धे और खानों से निकलने वाली चीजें, ४—गाँव और छोटे-छोटे घरेलू काम-धन्धे, ५—रेलें, सड़कें, बन्दरगाह, हवाई जहाज, तार-टेलीफोन, रेडियो, ६—पढ़ाई-लिखाई और खोज, ७—समाज-सेवा में क्या-क्या काम होगा।

खेती-बाड़ी

यह ठीक है कि पहली योजना में अनाज और कच्चे माल की पैदावार में मनमर्जी के अनुसार बढ़ोतरी हुई है।

पर अब इस तरफ कतई ध्यान देने की बात न हो, ऐसी बात भी नहीं है । आबादी दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। और वर्षा का कुछ ठिकाना नहीं है। कहीं होती है, कहीं नहीं होती। और कहीं इतनी होती है कि बाढ़ आ जाती है। खड़ी फसलें तबाह हो जाती हैं। इसलिए जरूरत इस बात की है कि समय-कुसमय के लिये अनाज का भण्डार जमा रखा जाए। इसलिए अनाज की पैदावार सवाई तो करनी ही पड़ेगी।

इसके साथ-साथ दूध, घी, मांस-मछली, फल और सब्जियों की पैदावार भी बढ़ानी होगी। इससे दोहरा लाभ होगा। एक तो अन्न की खपत में कमी होगी और दूसरे शरीर को पुष्ट करने वाली खुराक मिलेगी। इसके इलावा तेल के बीज, गन्ना, कपास, पटसन, नारियल का तेल, लाख, तम्बाकू, चाय, सुपारी की उपज भी बढ़ाई जाएगी। इनमें

से कुछ चीजें दूसरे देशों को बेची जाएँगी। कई ऐसी चीजें हैं, जो हमें दूसरे देशों से मँगानी पड़ती हैं। इसलिये भी कुछ बेचना जरूरी है ताकि लेन-देन में ताल-मेल रहे।

कई बाँधों के पूरा हो जाने से नहरों के लिये पानी मिल जाएगा। और पहले से ज्यादा ज़मीन सींची जाएगी। जहाँ नहरों से सिंचाई का इन्तजाम नहीं हो सकेगा, वहाँ नल-कुओं से सिंचाई की जाएगी।

जगह-जगह बीज-गोदाम खोले जाएँगे ताकि किसानों को अच्छा बीज ठीक दामों पर मिल सके। जैसा बीज, वैसी फसल। बीज अच्छा हुआ तो जरूरी बात है कि पैदावार बढ़ेगी।

बहुत-सी भूमि जो कि कांस आदि घासों के कारण बेकार पड़ी है, उसे खेती के योग्य बनाया जाएगा। बाढ़ से खेती की जमीन को कटने से रोकने का भी बन्दोबस्त किया जाएगा। पौधों को बीमारियों और कीड़े-मकोड़ों से बचाने का भी पूरा-पूरा प्रबन्ध किया जाएगा।

खेती-बाड़ी की शिक्षा के लिए कई कालेज खोले गए हैं। और भी छुट-पुट प्रयत्न इस काम के लिए हो रहे हैं। खेती की शिक्षा पाए हुए लोग गाँवों में फैल जाएंगे और लोगों को नए तरीके, नए औजार और नई फसलें उगाने की शिक्षा देंगे।

मिल-जुलकर खेती-बाड़ी हो, इसके लिये सहकारी-संगठनों को बढ़ावा दिया जाएगा।

पशुओं का स्वास्थ्य और नस्ल सुधारने पर ज्यादा जोर दिया जाएगा। पशुओं के हस्पताल खोले जाएंगे।

जंगलों की देख-भाल, सम्भाल का भी इन्तजाम किया जाएगा। नहरों और सड़कों के किनारे तथा गाँवों की बेकार पड़ी जमीन में वृक्ष लगाना भी इस योजना में शामिल है।

टीक जैसी कीमती लकड़ी की पैदावार बढ़ाने के लिए नए बाग लगाये जाएँगे, जड़ी-बूटियों की फसलें उगाना, दियासलाई की लकड़ी के बाग लगाना वगैरा काम इस योजना में शामिल हैं।

खेती के साथ खेती के काम में लगे मजदूरों की समस्या पर भी इसमें पूरा ध्यान दिया गया है। अनुमान है कि ३० प्रति सैकड़ा परिवार खेतीहर मजदूर हैं। भूदान में मिली हुई जमीन उन लोगों में बाँट दी जाएगी, जिनके पास भूमि नहीं है। फिर जो लोग बच रहेंगे उनकी सहकारी संस्थाएं बनाई जाएँगी और उनके लिए काम-काज देने के लिये बड़ी संख्या में घरेलू उद्योग खोले जाएँगे।

सिंचाई और बिजली

सिंचाई और बिजली दोनों ऐसी चीजें हैं कि जिनकी बढ़ती में देश की बढ़ती है। सिंचाई से अनाज की पैदावार बढ़ेगी और बिजली से छोटे-बड़े कारखाने चलने लगेंगे। हमारे देश में इन दोनों को बढ़ाने की पूरी-पूरी गुंजाइश है।

सन् १९५०-५१ में खेती योग्य भूमि का केवल छठा भाग सींचा जाता था। पहली योजना पूरी होने पर यह जो बढ़ोतरी हुई तो पाँचवें भाग की सिंचाई होने लगी। अब दूसरी योजना पूरी होने तक कुल खेती-भूमि का लगभग तीसरा भाग सींचा जा सकेगा।

सिंचाई की बड़ी योजनाओं के इलावा छोटी-छोटी

योजनायें भी बनाई गई हैं। इनका यह लाभ है कि ये जल्दी पूरी हो जाएंगी, और खेती को सिंचाई होने लगेगी। बड़े कामों को पूरा होने में तो देर लगती है।

सिंचाई और बिजली की बड़ी-बड़ी योजनाएँ एक साथ चल रही हैं। जहाँ कहीं बाँध बाँधे जाते हैं, उनसे सिंचाई के लिए तो पानी मिलता ही है, साथ उस पानी की शक्ति से बिजली भी बनती है।

ये बाँध एक तीसरा काम भी करते हैं। इनसे बाढ़ को रोकने में बड़ी सहायता मिलती है। जो पानी बिना बाँध के मनमाना फैल जाता था और जान और माल की हानि करता था, वही अब आज्ञा मानने वाले नौकर की तरह सारे काम करने लगा है।

उद्योग और खनिज

उद्योग-धन्धों को इस योजना में दो भागों में बांटा गया है। एक तो ऐसे उद्योग-धन्धे जिन्हें सरकार सम्भालेगी और दूसरे वे जिन्हें सरकार से बाहर के लोग सम्भालेंगे।

उद्योग

सरकार ने जिन-जिन उद्योगों को अपने हाथ में लिया है, उनमें दो बातें ध्यान देने योग्य हैं। एक तो यह कि उन

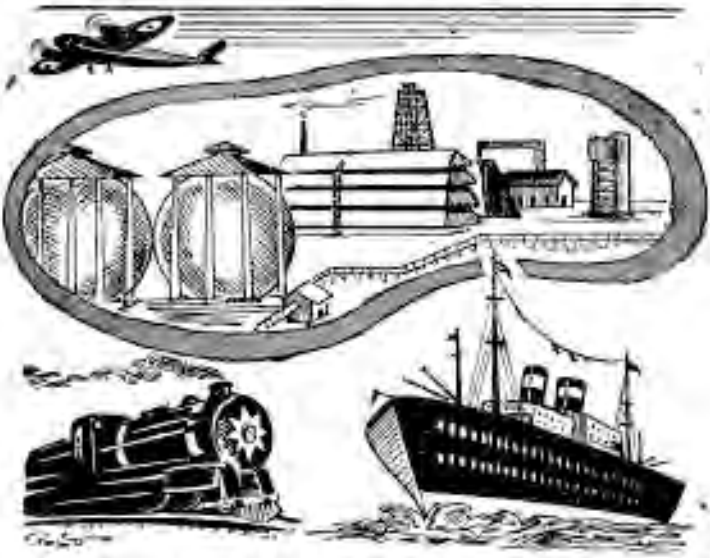

उद्योगों का सम्बन्ध आम जनता से है। और दूसरे यह कि उन्हें चालू करने में जितना रुपया लगेगा, उतना सरकार के इलावा कोई लगा भी नहीं सकता।

सरकार नीचे लिखे उद्योगों को चलाएगी :—

लोहा और इस्पात—पहला नम्बर लोहा और इस्पात का है। इस्पात के तीन कारखाने—एक उड़ीसा में, दूसरा

मध्यप्रदेश में, और तीसरा पश्चिमी बंगाल में खोला जा रहा है। इन तीनों कारखानों पर कोई साढ़े तीन अरब रुपया खर्च होगा।

भारी इंजनीयरिंग उद्योग—चितरंजन में, जहां रेलों के इंजन बनते हैं, एक ढलाई का बड़ा भारी कारखाना खुलेगा। यहां रेलों के कल-पुर्जे ढाले जाएंगे। इसी तरह के तीन ढलाई के कारखाने और खुलेंगे।

बिजली का भारी सामान—बिजली का भारी सामान तैयार करने के लिये भी कारखाना खोला जाएगा। इस पर कोई २५ करोड़ की लागत बैठेगी। अन्दाजा है कि १९६० तक यह कारखाना बिजली की बड़ी मशीनें बनाने लगेगा।

मशीनी औजार—मशीनी औजारों से मतलब है, जैसे खराद की मशीन, मिलिंग और ड्रिलिंग की मशीनें वगैरा। यह सब मशीनें छोटे-बड़े कारखानों में काम आती हैं।

जहाज, इंजन और रेल के डब्बे—वैसे जहाज और इंजन तो आगे ही अपने देश में बन रहे हैं, पर जरूरत भी तो दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। इसलिए ऐसा इन्तजाम किया जा रहा है कि उन्हीं कारखानों में ज्यादा काम होने लगे।

रेल के डिब्बे बनाने का जो कारखाना बना है, उसमें कोई ३५० डिब्बे साल में बनने लगेंगे।

मशीनी खाद—सिन्दरी के कारखाने में तो मशीनी खाद बनती ही है। अब उसके भी तीन नए कारखाने खुलेंगे।

इसके इलावा टेलीफोन, कुछ दवाइयां, बिजली के तार, वगैरा के कई कारखाने सरकार खोलेगी।

खनिज

खनिज का मतलब है, वह चीज जो खान से निकले। जैसे कोयला, लोहा, मिट्टी का तेल, वगैरा।

खनिजों में कोयले का पहला नम्बर है। कोयला दो काम आता है—एक जलाने के और दूसरा लोहे और इस्पात के कारखानों में कच्चे माल के तौर पर उसकी बड़ी जरूरत होती है। अभी तक प्रतिवर्ष जितना कोयला निकाला जाता है, उसे बढ़ाकर दुगुना करना है। कई नई खानों में खुदाई शुरू होगी।

तेल—हमारे देश में मिट्टी का तेल बाहर के देशों से आता है। पर खोज हो रही है कि कहीं अपने ही देश में से उसे निकाला जाए। दो जगह—ज्वालामुखी और कैम्बे में कुएं खोदे जाएंगे। तेल के स्रोतों का पता लगाने के लिये पूरी-पूरी खोज हो रही है।

गांव और छोटे उद्योग

दूसरी योजना की एक खास बात यह है कि बेरोजगारी को दूर करना। छोटे-छोटे उद्योगों में ज्यादा काम आदमियों के हाथों होता है और उसका लाभ भी आर्थिक

दृष्टि से निचले तबके के लोगों को होता है। इन सब बातों को सोचकर दूसरी योजना में छोटे और घरेलू उद्योगों पर खास जोर दिया गया है।

इनमें १—हथकरघा उद्योग; २—खादी; ३—गांव के धन्धे जैसे हाथ से चावल कूटना, घानी के तेल, चमड़ा कमाना, गुड़-शक्कर बनाना, हाथ की दियासलाई बनाना वगैरा शामिल हैं; ४—रेशम के कीड़े पालना, नारियल की जटा को कताई और बुनाई; दस्तकारियां; ६—छोटे पैमाने के उद्योग आदि।

सरकार ऐसा भी प्रबन्ध करेगी कि घरेलू धन्धों में तैयार होने वाले सामान और कारखानों में बनने वाले सामान में किसी तरह की होड़ न हो। छोटे उद्योगों की सरकार पूरी-पूरी मदद करेगी और देश के कोने-कोने में उन्हें फैलायेगी।

परिवहन और संचार

परिवहन से मतलब है, आदमियों और सामान को एक जगह से दूसरी जगह ले जाना। और संचार का मतलब है, डाक, तार, टेलीफोन, बेतार के तार, रेडियो वगैरा।

ज्यों-ज्यों उद्योग-धन्धे बढ़ रहे हैं, सामान को देश के कोने-कोने में पहुँचाने की जरूरत भी बढ़ रही है। सवारी की गाड़ियों में भी आप देखते ही हैं कि कितना भीड़-भड़क्का होता है। तो इसके लिए सवारी-गाड़ियां और

माल-गाड़ियाँ बढ़ानी पड़ेंगी। रेलों की पटरी बिछाने की जरूरत भी होगी।

देश में सड़कों का जाल बिछाना होगा। कई कच्ची सड़कों को पक्का भी बनाना पड़ेगा। समुद्री जहाजों के लिये बन्दरगाहों का भी विकास करना होगा। दूसरे देशों के साथ व्यापार के लिये माल लाने-ले जाने वाले जहाजों की जरूरत होगी। हवाई जहाज से सफर करने वालों की संख्या भी बढ़ रही है। उनकी मांग को भी पूरा करना होगा। दूसरी योजना में इन कामों पर काफी रुपया खर्च किया जाएगा।

कई नए डाकखाने, तारघर और आम जनता के उपयोग के लिये टेलीफोन-घर खोले जाएंगे। एक शहर से दूसरे शहर को सीधा टेलीफोन करने के लिए भी तारें बिछाई जाएंगी।

रेडियो स्टेशनों और स्टेशनों पर होने वाले कार्यक्रमों का भी विस्तार करना जरूरी है। यह सब चीजें गाँव वालों को भी आसानी से मिल सकें, इतना प्रबन्ध करना पड़ेगा।

शिक्षा और वैज्ञानिक खोज

किसी भी उन्नति चाहने वाले देश के बच्चों की पढ़ाई-लिखाई ठीक ढंग से होना जरूरी है। जैसा कि पहले बताया था, १४ वर्ष तक मुफ्त और जरूरी शिक्षा देने की बात हमारे विधान में लिखी है। हमारे देश में पढ़े-लिखे

लोग बहुत कम हैं। इस कमी को पूरा करना है। इसलिये छोटी-बड़ी पाठशालाएँ, कालेज और खास-खास पेशों की पढ़ाई के कालेज, सरकारी काम-काज की शिक्षा और समाज-शिक्षा का काम दूसरी योजना में बहुत होगा। वाचनालय और पुस्तकालय खोले जाएँगे। अपढ़ स्यानों को

पढ़ाने लिखाने और उनके काम की बातें सिखाने के लिये तरह-तरह के साधनों को काम में लाया जाएगा।

देहातों में एक सौ विज्ञान-मन्दिर खोले जाएंगे। विज्ञान-मन्दिर खोलने से यह लाभ होगा कि देहाती भाई खेती-बाड़ी, स्वास्थ्य-सफाई आदि के बारे में अपनी जानकारी बढ़ाएँ और लाभ उठाएँ।

हमारे देश में कई तरह की जड़ी-बूटियाँ पैदा होती हैं, उनकी खोज की जाएगी। इसी प्रकार धातुओं आदि के बारे में भी खोज होगी। इन खोजों से उद्योग-धन्धों को बहुत लाभ पहुँचेगा।

समाज-सेवाएँ

समाज-सेवा में नीचे लिखी बातें शामिल हैं, स्वास्थ्य, रहने के स्थान, पिछड़ी हुई जातियों की उन्नति और कारीगरी की शिक्षा देना।

स्वास्थ्य को सुधारने के लिये अस्पताल खोले जाएँगे। देहातों में जो बीमारियाँ फैलती हैं, वे फैलने ही न पाएँ, ऐसा इन्तजाम किया जाएगा। डाक्टरी की पढ़ाई के लिये कालेज खोले जाएँगे। नर्सों और दाइयों को उनके काम की शिक्षा दी जाएगी।

मलेरिया की रोक-थाम का पूरा-पूरा यत्न होगा। तपेदिक से बचने के लिये बी० सी० जी० नामक दवाई के टीके लगाए जाएँगे और ऐसे अस्पताल खोले जाएँगे, जहाँ तपेदिक के रोगियों का ही इलाज होगा।

शहरों की गन्दी बस्तियों को हटाकर नए हवादार मकान बनाए जाएँगे। गाँव में भी पुराने ढंग के मकानों के स्थान पर नए रोशनीदार और हवादार मकान बनाए जाएँगे। सड़कें और गलियाँ चौड़ी की जाएँगी। गाँवों में पंचायत-घर बनेंगे, बच्चों के लिए खेल के मैदान बनेंगे और वहाँ खेल का सामान होगा।

पिछड़ी जातियों का कल्याण

पिछड़ी जातियों के लोगों को ऊपर उठाने के लिये ताकि वे देश के दूसरे भाइयों के साथ कन्धे से कन्धा भिड़ाकर काम कर सकें, काफी रुपया खर्च किया जाएगा। छुआ-छूत को दूर करना भी बहुत जरूरी है। उनकी पढ़ाई-लिखाई पर खास ध्यान दिया जायेगा।

अनाथ बच्चों, विधवा स्त्रियों और अपाहिजों के कल्याण के लिये भी दूसरी योजना में बहुत काम होगा।

मजदूर अच्छा काम और अच्छी मजदूरी पा सकें, इस के लिये उन्हें काम सिखाने की जरूरत होगी। उसका भी प्रबन्ध किया जायगा।

आपने सुन ही लिया कि दूसरी पंचवर्षीय योजना में क्या कुछ और कितना कुछ काम होने वाला है। देश का भाग्य बदल जायगा चाचा जी, मुझे तो इस बात पर पूरा भरोसा है।

★